B.A. History Hons, Part: II
Paper: III, Unit: I, Date: 29.09.2020 Lecture No.: 27
Session: कुतुबुद्दीन ऐबक के जीवन तथा उपलब्धियाँ

दिल्ली सल्तनत का पहला शासक कुतुबुद्दीन ऐबक था और उसी को भारत में मुसलमान तुर्की राज्य का संस्थापक भी माना जाता है। मुहम्मद गोरी ने भारतीय प्रदेशों को जीतकर अपने राज्य का अंग बनाया, परन्तु वह गोरी का सुल्तान था न कि दिल्ली का। कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का शासक था। ऐबक की मुख्य सफलता भारत के तुर्की राज्य को गोरी और गजनवी के सुल्तानों के स्वामित्व से मुक्त करके उसे स्वतंत्रता प्रदान करने का प्रयत्न करना तथा गोरी की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न हुई अस्थिर परिस्थितियों में स्थायित्व प्रदान करना था। इसी कारण उसे भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक कहते हैं। कुतुबुद्दीन ऐबक तुर्क था और उसके माता-पिता तुर्किस्तान के निवासी थे। बचपन में निशापुर के काजी फखरुद्दीन अब्दुल अजीज कूफी ने उसे एक दास के रूप में खरीदा था। तुर्कों में अपने गुलामों को योग्य बनाने की परम्परा थी। अनेक व्यक्ति अपने गुलामों को साहित्य, कला, और सैनिक शिक्षा प्रदान करते थे।

अनेक गुलामों को राज्य की उत्तम सेवा करने योग्य बनाया जाता था और अधिक-से-अधिक मूल्य प्राप्त हो सके। इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1197 ई० में हुए अन्हिलवाड़ के युद्ध के पश्चात् खरीदा और वही इल्तुतमिश, ऐबक का दामाद और दिल्ली का सुल्तान बना। बहाउद्दीन को इल्तुतमिश ने 1232 ई० में खरीदा और उसी बलबन ने इल्तुतमिश की एक पुत्री से विवाह किया। सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद से अपनी पुत्री का विवाह किया और अन्त में स्वयं दिल्ली का सुल्तान बना। इस प्रकार मुहम्मद गोरी के योग्यतम सुबेदार कुतुबुद्दीन ऐबक, ताजुद्दीन यिल्दिज और नासिरुद्दीन कुबाचा उसके गुलाम थे। निशापुर के काजी ने ऐबक को सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान की। काजी के मृत्यु के पश्चात उसके पुत्रों ने ऐबक को बेच दिया और अन्त में मुहम्मद गोरी ने उसे खरीदा। ऐबक ने धीरे-धीरे अपनी योग्यता के कारण अमीर-ए-आखूर (अश्वशाला का अध्यक्ष) के पद को प्राप्त कर लिया। तराइन के द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात 1192 ई० में गोरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया। इस कारण मुहम्मद गोरी की मृत्यु के अवसर पर कुतुबुद्दीन ऐबक गोरी के दिल्ली, लाहौर और उनके अधीन भारतीय प्रदेशों का सुबेदार था। 1206 ई० में मुहम्मद गोरी का वध कर दिया गया। अतः लाहौर के नागरिकों ने कुतुबुद्दीन ऐबक को लौहार आकर शासन-सत्ता अपने हाथों में लेने के लिए आमन्त्रित किया। ऐबक ने लाहौर पहुँच कर शासन-सत्ता अपने हाथों में ले ली।

सिंहासन पर बैठने के अवसर पर ऐबक अनेक कठिनाईयों से घिरा हुआ था। वह अपने सभी सरदारों से वफादारी का आशा नहीं कर सकता था बल्कि उनकी ईर्ष्या और व्यक्तिगत आकांक्षाएं उसके और नव स्थापित तुर्की राज्य के लिए खतरा सिद्ध हो सकता था। तुर्कों ने अफगानिस्तान से लेकर उत्तर भारत के बंगाल तक के भूमि-प्रदेशों को अपने पैरों तले रौंद अवश्य दिया था; परन्तु वे इसके निर्विवाद स्वामी बनने में अभी तक असफल थे। गोरी ने राजपूतों की शक्ति को दुर्बल अवश्य कर दिया था परन्तु समाप्त नहीं कर सका था और राजपूत स्थान-स्थान पर तुर्कों का मुकाबला

र रहे थे तथा अनेक स्थानों से तुर्कों को निष्कासित कर रहे थे। चन्देल शासक ने कालिंजर को पुनः विजय करके तुर्कों को दक्षिण की ओर बढ़ने के मार्ग को रोक दिया था, गहड़वाल राजा हरिश्चन्द्र ने फर्रुखाबाद और बदायूँ में अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी और प्रतिहार-राजपूतों ने ग्वालियर को पुनः जीत लिया था। वास्तविकरूप में ऐबक का आधिपत्य सिन्ध, पंजाब, दिल्ली और दोआब तक सीमित था और वहाँ पर भी राजपूत उसकी सत्ता का विरोध कर रहे थे। ऐबक का कार्य अपने स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित रखना था। उसने कौशल और कूटनीति से कार्य किया। उसने अपने तुर्की सरदारों को अपनी अधीनता स्वीकार कर लिया। अपनी स्थिति को दृढ़ करने के आशय से ही उसने अपनी पुत्री का विवाह इल्तुतमिश से और अपनी बहन का विवाह नासिरुद्दीन कुबाचा से किया था तथा सम्भवतया कुबाचा ने उसे दिल्ली का सुल्तान स्वीकार किया था। इस कारण ऐबक सर्वदा लाहौर में रहा।

ऐबक को राजपूतों की ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला और न वह साम्राज्य-विस्तार की नीति को अपना सका बल्कि राजपूतों ने कुछ स्थानों को उससे छीन लिया और ऐबक उन्हें पुनः जीतने का प्रयत्न भी न कर सका। चौगान के खेल में घोड़े से गिर जाने के कारण 1210 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। उसे लाहौर में दफनाया गया और उसकी कब्र पर एक स्मारक बना दिया गया। ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक मान लिया गया। मुहम्मद गोरी की भारत विजय सुरक्षित और संगठित किया तथा उसके मृत्यु के पश्चात् भारतीय राज्य को गजनी के आधिपत्य से मुक्ति दिलाकर एक स्वतंत्र राज्य में परिणत करने का प्रयत्न शुरु किया। भारत के तुर्की सरदारों को अपने साथ और आधिपत्य में लेकर उसने दिल्ली के तुर्की राज्य को एकता प्रदान की और दिल्ली सल्तनत को शुभारंभ किया। भारत का तुर्की राज्य गजनी-राज्य के अधीन हो जाता अथवा तुर्की सरदारों के झगड़ों के कारण नष्ट हो जाता। तुर्की राज्यों को एकता प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए प्रयत्न नहीं किया। इसी आधार पर ऐबक को भारत के तुर्की राज्य का संस्थापक माना गया है।

ऐबक मुहम्मद गोरी के गुलामों में योग्यतम गुलाम साबित हुआ। वह अपनी योग्यता के कारण धीरे-धीरे उन्नति करता हुआ सुल्तान के पद तक पहुँचा और एक ऐसे राज्य का संस्थापक बना जो भारत में स्थायी रहा। ऐबक व्यवहारिक बुद्धि युक्त एवं कुशल कूटनीतिज्ञ था। भारतीय के तुर्की राज्य को मध्य एशिया की राजनीति से अलग रखा। नासिरुद्दीन कुबाचा, यिल्दिज और बंगाल के अमीरों से उसका व्यवहार कौशल और कूटनीतिज्ञता का रहा होगा। जिसके कारण भारत की सीमाओं का तुर्की सरदार ने विरोध किया। ऐबक की सबसे बड़ी योग्यता उसका एक कर्मठ सैनिक और योग्य सेनापति था। वह एक साहसी और अनुभवी सेनापति था। ऐबक एक योग्य सेनापति, एक व्यवहारिक और एक उदार व्यक्ति था। वह भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माने गये थे।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर